• बाल कविता...

गिलहरी का घर...

एक गिलहरी एक पेड़ पर
बना रही है अपना घर,
देख-भाल कर उसने पाया
खाली है उसका कोटर।
कभी इधर से, कभी उधर से
कुदक-फुदक घर-घर जाती,
चिथड़ा-गुदड़ा, सुतली, तागा
ले जाती जो कुछ पाती।
ले जाती वह मुंह में दाबे
कोटर में रख-रख आती,
देख बड़ा सामान इकट्ठा
किलक-किलककर वह गाती।
चिथड़े-गुदड़े, सुतली, धागे-
सब को अन्दर फैलाकर,
काट कुतरकर एक बराबर
एक बनायेगी बिस्तर।
फिर जब उसके बच्चे होंगे
उस पर उन्हें सुलायेगी,
और उन्हीं के साथ लेटकर
लोरी उन्हें सुनायेगी ।

■ हरिवंशराय बच्चन

• चुटकुले...

बच्चा स्कूल में गधा लेकर आया
टीचर– इसे क्यों लाए हो
बच्चा– मैम आप ही तो कहती हो मैंने बड़े से बड़े गधे को इंसान बनाया है।
मैंने सोचा इस बेचारे का भी भला हो जाएगा।

डॉक्टर – कहिए कैसे आना हुआ...
राजू– डॉक्टर साहब लिवर में बहुत दर्द हो रहा है
डॉक्टर– शराब पीते हो?
राजू– हां– हां बिल्कुल पर छोटा पैक ही बनाना।

चिंकी– क्यों?
पिंकी– चिंता से यार
चिंकी– किस बात की चिंता है यार तुझे?
पिंकी– बाल झड़ने की...

टीचर– सत्य और भ्रम में क्या फर्क है?
मिंकू – सर, आप पढ़ा रहे हैं ये सत्य है
और हम पढ़ रहे हैं ये आपका भ्रम है...

• जानकारी...

सबसे लंबे रेलवे प्लेटफॉर्म

भारत का रेलवे, दुनिया के सबसे बड़े रेलवे नेटवर्क में से एक के रूप में प्रसिद्ध और देश के प्रमुख नियोक्ता के रूप में जाना जाता है। भारतीय उपमहाद्वीप पर पहली ट्रेन बॉम्बे से ठाणे तक 21 मील की दूरी पर चली थी। 16 अप्रैल 1853 को इसका औपचारिक उद्घाटन समारोह का आयोजन किया गया था, जब लगभग 400 अतिथियों को लेकर 14 सवारी डिब्बों वाली रेलगाड़ी दोपहर 3.30 बजे बोरीबंदर से रवाना हुई थी। भारत के रेलवे को कई जोनों में बांटा गया है।

▶▶ **हुबली जंक्शन रेलवे स्टेशन, कर्नाटक :** हुबली जंक्शन, आधिकारिक तौर पर श्री सिद्धरूधा स्वामीजी रेलवे स्टेशन, कर्नाटक, भारत में स्थित भारतीय रेलवे के दक्षिण पश्चिम रेलवे जोन के हुबली रेलवे डिवीजन के तहत एक रेलवे जंक्शन स्टेशन है. इसके प्लेटफॉर्म नंबर 1 की लंबाई लगभग 1,505 मीटर है।

▶▶ **गोरखपुर रेलवे स्टेशन, उत्तर प्रदेश :** गोरखपुर रेलवे स्टेशन भारतीय राज्य उत्तर प्रदेश में गोरखपुर शहर के केंद्र में स्थित है। यह उत्तर पूर्व रेलवे के मुख्यालय के रूप में कार्य करता है। स्टेशन क्लास A1 रेलवे स्टेशन की सुविधा प्रदान करता है। गोरखपुर यार्ड के उद्घाटन के बाद इस स्टेशन की लंबाई लगभग 1,355.40 मीटर है। गोरखपुर रेलवे स्टेशन उत्तर भारतीय रेलवे का बहुत महत्वपूर्ण जंक्शन है। इस स्टेशन पर 10 प्लेटफॉर्म हैं।

▶▶ **कोल्लम जंक्शन, केरल :** कोल्लम जंक्शन रेलवे स्टेशन केरल के सबसे पुराने रेलवे स्टेशनों में से एक है और इस जंक्शन की लंबाई लगभग 1,180.5 मीटर है। यह शोरानूर जंक्शन के बाद क्षेत्रफल की दृष्टि से केरल का दूसरा सबसे बड़ा रेलवे स्टेशन भी है और राज्य के सबसे पुराने रेलवे स्टेशनों में से एक है। इस स्टेशन पर 6 प्लेटफॉर्म हैं।

▶▶ **खड़गपुर जंक्शन, पश्चिम बंगाल :** खड़गपुर पश्चिम बंगाल में पश्चिम मेदिनीपुर जिले के खड़गपुर उपखंड में एक रेलवे स्टेशन है और इसकी लंबाई लगभग 1,072.5 मीटर है। इस स्टेशन पर 12प्लेटफॉर्म हैं।

▶▶ **पीलीभीत जंक्शन रेलवे स्टेशन, उत्तर प्रदेश :** पीलीभीत जंक्शन इज्जतनगर रेलवे मंडल का महत्वपूर्ण रेलवे स्टेशन है। प्लेटफार्म की लंबाई लगभग 900 मीटर है। इस स्टेशन पर 4 प्लेटफॉर्म हैं। यह स्टेशन उत्तर पूर्वी रेलवे के प्रशासनिक नियंत्रण में है।

▶▶ **बिलासपुर रेलवे स्टेशन, छत्तीसगढ़ :** बिलासपुर छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर जिले का एक शहर है। प्लेटफार्म की लंबाई लगभग 802 मीटर है। यह छत्तीसगढ़ का सबसे व्यस्त स्टेशन भी है। इस स्टेशन पर 8 प्लेटफॉर्म हैं।

• राजस्थानी लोक-कथा

हुंकार की कलंगी

गतांक से आगे...

राणा जी द्वारा पत्र में लिखे आखिरी वाक्य माजी साहब के नजरों के आगे घुमने लगे- 'हुक्म की तामिल नहीं की गयी तो जागीर जब्त कर ली जाएगी। देशद्रोह व हरामखोरी समझा जायेगा आदि आदि।'

पत्र के आखिरी वाक्यों ने माजी सा के मन में ढेरों विचारों का सैलाब उठा दिया-'जागीर जब्त हो जाएगी! देशद्रोह व हरामखोरी समझा जायेगा! मेरा बेटा अपने पूर्वजों के राज्य से बाहर बेदखल हो जायेगा और ऐसा हुआ तो उनकी समाज में कौन इज्जत करेगा? पर उसका आज बाप जिन्दा नहीं है तो क्या हुआ ? मैं माँ तो जिन्दा हूँ! यदि मेरे जीते जी मेरे बेटे का अधिकार छिना जाए तो मेरा जीना बेकार है ऐसे जीवन पर धिक्कार। और फिर मैं ऐसी तो नहीं जो अपने पूर्वजों के वंश पर कायरता का दाग लगने दूँ, उस वंश पर जिसनें कई पीढ़ियों से बलिदान देकर इस भूमि को पाया है मैं उनकी इस बलिदानी भूमि को ऐसे आसानी से कैसे जाने दूँ?

ऐसे विचार करते हुए माजी सा की आँखों वे दृश्य घूमने लगे जो युद्ध में नहीं जाने के बाद हो सकते थे- 'कि उनका जवान बेटा एक और खड़ा है और उसके सगे-संबंधी और गांव वाले बातें कर रहें है कि इन्हें देखिये ये युद्ध में नहीं गए थे तो राणा जी ने इनकी जागीर जब्त कर ली थी। वैसे इन चुंडावतों को अपनी बहादुरी और वीरता पर बड़ा नाज है हरावल में भी यही रहते है।' और ऐसे व्यंग्य शब्द सुन उनका बेटा नजरें झुकाये दांत पीस कर जाता है। ऐसे ही दृश्यों के बारे में सोचते सोचते माजी सा का सिर चकराने लगा वे सोचने लगे यदि ऐसा हुआ तो बेटा बड़ा होकर मुझ माँ को भी धिक्कारेगा।

ऐसे विचारों के बीच ही माजी सा को अपने पिता के मुंह से सुनी उन राजपूत वीरांगनाओं की कहानियां याद आ गयी जिन्होंने युद्ध में तलवार हाथ में ले घोड़े पर सवार हो दुश्मन सेना को गाजर मुली की तरह काटते हुए खलबली मचा अपनी वीरता का परिचय दिया था। दूसरे उदाहरण क्यों उनके ही खानदान में पत्ताजी चुंडावत की ठकुरानी उन्हें याद आ गयी जिसने अकबर की सेना से युद्ध किया और अकबर की सेना पर गोलियों की बौछार कर दी थी। जब इसी खानदान की वह ठकुरानी युद्ध में जा सकती थी तो मैं क्यों नहीं? क्या मैं वीर नहीं? क्या मैंने भी एक राजपूतानी का दूध नहीं पिया? बेटा नाबालिग है तो क्या हुआ? मैं तो हूँ! मैं खुद अपनी सैन्य टुकड़ी का युद्ध में नेतृत्व करुँगी और जब तक शरीर में जान है दुश्मन से टक्कर लूंगी।

और ऐसे वीरता से भरे विचार आते ही माजी सा का मन स्थिर हो गया उनकी आँखों में चमक आ गयी, चेहरे पर तेज झलकने लगा और उन्होंने बड़े ही आत्मविश्वास के साथ प्रधान जी को हुक्म दिया कि-

'राणा जी हुक्म सिर माथे! आप युद्ध की तैयारी के लिए अपनी सैन्य टुकड़ी को तैयार कीजिये हम अपने स्वामी के लिए युद्ध करेंगे और उसमें जान की बाजी लगा देंगे।'

प्रधान जी ने ये सुन कहा- 'माजी सा! वो तो सब ठीक है पर बिना स्वामी के केसी फौज?

माजी सा बोली- 'हम है ना! अपनी फौज का हम खुद नेतृत्व करेंगे।'

प्रधान ने विस्मय पूर्वक माजी सा की और देखा। यह देख माजी सा बोली-

'क्या आजतक महिलाएं कभी युद्ध में नहीं गयी? क्या आपने उन महिलाओं की कभी कोई कहानी नहीं सुनी जिन्होंने युद्धों में वीरता दिखाई थी? क्या इसी खानदान में पत्ताजी की ठकुरानी सा ने अकबर के खिलाफ युद्ध में भाग ले वीरगति नहीं प्राप्त की थी? मैं भी उसी खानदान की बहु हूँ तो मैं उनका अनुसरण करते हुए युद्ध में क्यों नहीं भाग ले सकती?

-जारी

पत्र के आखिरी वाक्यों ने माजी सा के मन में ढेरों विचारों का सैलाब उठा दिया–'जागीर जब्त हो जाएगी! देशद्रोह व हरामखोरी समझा जायेगा! मेरा बेटा अपने पूर्वजों के राज्य से बाहर बेदखल हो जायेगा और ऐसा हुआ तो उनकी समाज में कौन इज्जत करेगा?

पर उसका आज बाप जिन्दा नहीं है तो क्या हुआ ? मैं माँ तो जिन्दा हूँ! यदि मेरे जीते जी मेरे बेटे का अधिकार छिना जाए तो मेरा जीना बेकार है ऐसे जीवन पर धिक्कार...

• रोचक...

जिरेनियम

जिरेनियम का वैज्ञानिक नाम 'पिलारगोनियम ग्रेवियोलेन्स' है। ये मूलरूप से अफ्रीका का पौधा है। इसका तेल इतना गुणकारी है कि इसका उपयोग पूरी दुनिया में असंख्य हर्बल उत्पादों, जैविक दवाईयों और एरोमा–थेरेपी में किया जाता है। जिरेनियम के तेल की पूरी दुनिया में मांग रहती है। जिरेनियम की खेती मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, बिहार, हिमाचल प्रदेश और उत्तर–पूर्वी क्षेत्रों में की जा सकती है। उत्तर प्रदेश के सम्भल, बदायूं, कासगंज जैसे कई जिलों में CSIR-CIMAP की ओर से विकसित नयी विधि से जिरेनियम की सफल खेती की जा रही है। जिरेनियम के पौधों को बरसात से बचाना बहुत जरूरी है, क्योंकि बरसात से बचाये गये पौधों से ही अक्टूबर से नर्सरी तैयार करना शुरू करते हैं। जिरेनियम की खेती के लिए नर्सरी में विकसित पौधों की रोपाई नवम्बर से फरवरी के दौरान की जा सकती है। लेकिन वैज्ञानिक फसल चक्र के हिसाब से फरवरी को ही मुफीद वक्त मानते हैं।

• मशरूम...

▶▶ *विशेषज्ञों का मानना है कि कम जगह, कम समय और कम लागत में तैयार होने वाला मशरूम, उच्च मूल्य वाली कृषि फसल है यानी ये महंगी बिकती है और मुनाफा अच्छा होता है। ये छोटे और सीमांत किसानों की आय में बढ़ोतरी करने में कारगर साबित हो सकता है। मशरूम की अलग–अलग किस्मों की खेती कर किसान अच्छी आमदनी कर रहे हैं। भारत में मुख्य तौर पर मशरूम की 5 किस्मों की खेती ही व्यावसायिक स्तर पर की जाती है।*